प्रेम की ओर . . .

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रेम की ओर . . .

जीने और मरने में श्वास मूलभूत है। तथापि यह शक्तिशाली प्राण सभी के वश के बाहर है। प्रेम सर्वाधिक प्रबल शक्ति है। तथापि यह रहस्यमयी सत्ता खुद को छिपाए रखती है। इन विरोधाभासों का सामना करना अच्छा है; अन्तिम परिणाम अमर-भोज का रसास्वादन करने से तनिक भी कम नहीं है।

~ गुरुमाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।